113

Airo International Research Journal
Volume XV, ISSN: 2320-3714
March, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

बीसवीं शती के प्रबन्धकाव्यों में छन्द योजना

डॉ. ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

हिन्दी कविता बीसवीं शती के प्रारम्भ तक छन्दों की अक्षुण्ण परम्परा - में बंधी रही । लेकिन औद्योगिक, वैज्ञानिक, वैचारिक और साहित्यिक क्षेत्र में सहसा तीव्र परिवर्तन घटित हुए । साहित्य की अनुभूति और अभिव्यक्ति सम्बंधी अनेक परिवर्तनों के साथ छन्द सम्बंधी अवधारणा में भी परिवर्तन हुआ । यांत्रिक भौतिकवाद और वैज्ञानिकता की यह शती मूलत: विद्रोही और प्रतिरोधात्मक हो उठी । इसने कविता के स्वभाव को भी विद्रोही की चेतावनी दी । छन्द मुक्ति का सबसे तीव्र उद्घोष छायावाद के विद्रोही कवि महाप्राण निराला ने किया । बाद में छन्द मुक्ति की यह चेतना इतनी संक्रमित हुई की प्रकृति के चितेरे पंत भी - 'खुल गए छन्द के बन्ध, प्रास के रजत-पाश' कहकर छन्द मुक्ति की वकालत करने लगे । आधुनिक कवि को रूढ़ छन्द बेड़ी मालूम हए । उसने अनुभव किया कि छन्द के परम्परित ढाचें उसकी स्वाधीन अभिव्यक्ति के मार्ग में बाधा है, क्योंकि कवि युगानुरूप नयी स्वाभाविकता के अन्वेषण में जुट गया था । परिणामस्वरूप कवि की गतिमान उर्जा ने छन्द के बन्धन को अस्वीकार कर दिया । लेकिन यहां स्पष्ट कर देना अनिवार्य है कि यह मामला छन्द ढांचों को तोड़ने का था, छन्द को समूचा निरस्त कर देने का नहीं था । निराला ने स्पष्ट कहा था कि 'मुक्त छन्द तो वह है जो छन्द की भूमि में रहकर भी मुक्त है " यानि उनके लिए मुक्तछन्द छन्द की ही नयी संरचना थे । कुछ लोग यह आरोप लगाते हैं कि आधुनिक हिन्दी कविता छन्दविहीन कविता है । वस्तुतः यह एक भ्रम है । बिना छन्द के कविता हो ही नहीं सकती । छन्द कविता का रहस्य है । अज्ञेय के शब्दो में 'छन्द काव्यभाषा की आँख है, भाषा अपने को सुनकर भी काम चला लेती है, काव्य भाषा देख भी लेती । है ।" यदि ध्यान से देख जायें तो छन्द ध्वनियों का संकलन तथा नियमन है । छन्द के द्वारा हम साधारण बोल चाल के गद्य को नियमित करते हैं । "छन्द स्वरों को स्पष्टतर करता है : छन्द भाषा की गति को धीमा करता है क्योंकि स्वरों की मात्रा बढ़ाता है: दीर्घतर स्वर अपनी पूरी अनुगूंज के साथ सामने आते हैं । उनकी सच्ची रंगत पहचानी जाती है । स्वरों की रंगत भावना की रंगत है; अत: छन्द के द्वारा स्वर अर्थ की वृद्धि करते हैं । छन्दमय उक्ति हमें शब्दार्थ भर ही नहीं देती बल्कि रंजना विशिष्ट भावार्थ भी देती है ।"

आज की हिन्दी कविता लय के सहारे अपने को व्यवस्थित करती है । शब्द की लय के साथ-साथ अर्थ की भी एक लय होती है । इसी लय संरचना के द्वारा हम कविता की समग्रता को ग्रहण करते हैं । कविता में अर्थ की लय भी होती है । जिस तरह ध्वनि, ध्वनियों से निर्मित शब्दों के विभिन्न तरह के संयोजन अपने विशिष्ट क्रमों में छन्द में नादात्मकता से शब्द की लय की प्रस्तुति करते हैं उसी तरह अर्थ की विभिन्न इकाइयों से अर्थ की लय संरचना होती है, जो आधुनिक कविता में लय संरचना का आधार

Airo International Research Journal
Volume XV, ISSN: 2320-3714
March, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

अपरिवर्तित रूपों में देखे जा सकते है । आत्मजयी में मुख्यतया मुक्त छन्द प्रयुक्त हुआ है किन्तु शब्द और अर्थ की । लयात्मकता सर्वत्र बनी रही है ।

शैल्पिक प्रतिमानों की दृष्टि से शम्बूक एक श्रेष्ठ कृति है । शम्बूक में तुकान्त अतुकान्त दोनों प्रकार के छन्द मिलते हैं । कवि ने शम्बूक की भूमिका में लिखा है "छन्द बद्ध कविता लिखने के संस्कार मुझमें पहले से रहे हैं, मुक्त छन्द की भूमि पर । मुझे निराला और नयी कविता ने ला दिया । इस काव्य में दोनों को देखकर किसी को आश्चर्य हो तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा । कुछ दूर तक मैंने इस रचना को गुप्त जी के भाव से अवशिष्ट होकर लिखा है ।" स्पष्ट है कि कवि पर पूर्ववर्ती काव्यों का प्रभाव रहा है । यही कारण है शम्बूक में कहीं-कहीं तुकान्त छन्द भी प्रयुक्त हुआ है

समग्रतः नवीन चेतना के प्रबन्धकाव्यों पर विचार किया जाए तो ऐसा लगता | है कि इनकी आत्मा मुक्तछंदीय है । अभिव्यंजना प्रणाली की दृष्टि से प्रवाद पर्व, संशय की एक रात, कनुप्रिया, आत्मदान आदि सभी कृतियाँ मुक्तछन्द का प्रभाव रखती है । मुक्त छन्द में वैविध्य की कहीं अधिक संभावना होती है । संभवत: इसी कारण इन कवियों ने मुक्त छंद के आग्रह को स्वीकार किया है ।

संदर्भ सूची ----------

1. अज्ञेय : भवन्ती, राजपाल एंड संस, दिल्ली 1972 पृष्ठ – 23
2. वही
3. संजीव कुमार, अन्धायुग, निकष पर, संजीव प्रकाशन, कुरुक्षेत्र 1987 पृष्ठ - 131
4. धर्मवीर भारती, अंधायुग, किताब महल-15, इलाहाबाद 1993, पृष्ठ - 39
5. जगदीश गुप्त : शम्बूक, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 1990 पृष्ठ – 15